सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संस्थागत विलक्षणता (Institutional Distinctiveness

विश्वविद्यालय की **प्राचीनता** इस संस्था की अन्यतम विलक्षणता है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय भारतीय सनातन की ज्ञान परम्परा के सतत संरक्षण, संवर्धन, अध्ययन-अध्यापन एवं चारित्रिक विकास से समाज को दिशा-निर्देशित करने में वर्ष 1791 से सतत दृढ़ संकल्पित है। यह 22 मार्च 1958 से विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठापित है।

- **सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रायशः 600 से अधिक सम्बद्ध महाविद्यालय हैं जो इस विश्वविद्यालय की विशालता को प्रदर्शित करता है।**
- **प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्र एवं तन्त्रागम विषय का अध्ययन-अध्यापन मात्र सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में ही सञ्चालित है।**
- **सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में विश्व के श्रेष्ठतम पाण्डुलिपि संग्रहालय सरस्वती भवन है जिसमें लगभग 1 लाख पाण्डुलिपियाँ संग्रहित हैं।**

1,11,132 पाण्डुलिपियों का संग्रह

लिपि आधारित विवरण

प्राचीन नागरी, वर्तमान देवनागरी में सर्वाधिक पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं। अन्य लिपियों में बांग्ला, उड़िया, मैथिली, गुरूमुखी, शारदा, अरबी-फारसी और वर्मी लिपियों में पाण्डुलिपियां विद्यमान

पत्र आधारित विवरण

बहुसंख्य पाण्डुलिपियां कागज पर हैं । भोज पत्र, काष्ठ पत्र, ताड़पत्र, स्वर्ण पत्र, लीथो (शिलापत्र) पर भी लिप्यासन विद्यमान

चौदह खण्ड (कुल 36 भाग) में कैटलाग

विशेष –

- हस्तनिर्मित कागज पर लगभग 1,000वर्ष पुरानी पाण्डुलिपि (श्रीमद्भागवत्) सरस्वती भवन में है, जो संभवतः देश की प्राचीनतम कागज आधारित पाण्डुलिपि है।
- स्वर्णपत्र से आच्छादित (लाक्ष पत्र) पर कमवाचा (वर्मी लिपि) यहां संग्रहीत है।
- रास पंचाध्यायी (सचित्र) स्वर्णाक्षरयुक्त है और इसकी सूक्ष्म कलात्मकता अनुपम है।
- गोविन्द भट्ट कृत ऋग्वेदसंहिता भाष्य – श्रुतिविकाश सायणाचार्य कृत ऋग्वेदसंहिताभाष्य से प्राचीन है।
- अन्य अनेक वैशिष्ट्यपूर्ण पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है।

- छात्रों एवं आगन्तुकों में नैतिक मूल्यों का बोध कराने हेतु सम्पूर्ण विश्वविद्यालयीय परिसर में मूल्यपरक ज्ञानफलक में ऋचाओं, सूक्तिओं एवं सुविचारों को ज्ञानफलक पर अंकित किया गया है।

- विश्वविद्यालय परिसर में संग्रहालय स्थित है जिसमें मध्ययुगीन अवशेषों से लेकर ताड़पत्र पर चित्रित सम्पूर्ण रामायण अवस्थित है।

संग्रहालय

1 मध्ययुगीन पत्थर आधारित दीर्घा,

2 कला एवं लिपि दीर्घा,

3 प्रारंभिक पत्थर आधारित दीर्घा,

4 सिक्के की दीर्घा,

5 मिट्टी के बर्तन एवं मूर्ति की दीर्घा ।

- खगोलयीय गणनाओं, ग्रहों की स्थिति, भौमिक स्थिति, काल निर्धारण सम्बन्धी आकड़े एकत्रित करने उनका अध्ययन व विश्लेषण हेतु वेधशाला का परिचालन होता है।

यंत्रों के नाम

नाड़ीवृत्तयंत्र,
बृहत्सम्राटयंत्र, यम्योत्तरभित्तियन्त्र,
तुरीययन्त्र, षष्ठयंशयन्त्र,
क्रान्तिवृत्तयन्त्र,
चक्रयन्त्र, शंकुयंत्र,
कर्कमकरराशिवलययन्त्र।

(वेधशाला)

(वेधशाला)

- विश्व के कल्याणार्थ वेद विभाग में स्थित यज्ञशाला में श्रौत यज्ञ एवं स्मार्त यज्ञों को विधि पूर्वक सम्पादित किया जाता है।

नवग्रह-वेदिका

➢ संस्थान की स्थापना एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान के संवाहक व्यक्तित्व

डॉ० जे० आर० वैलण्टाइन	Dr. THIBAUT 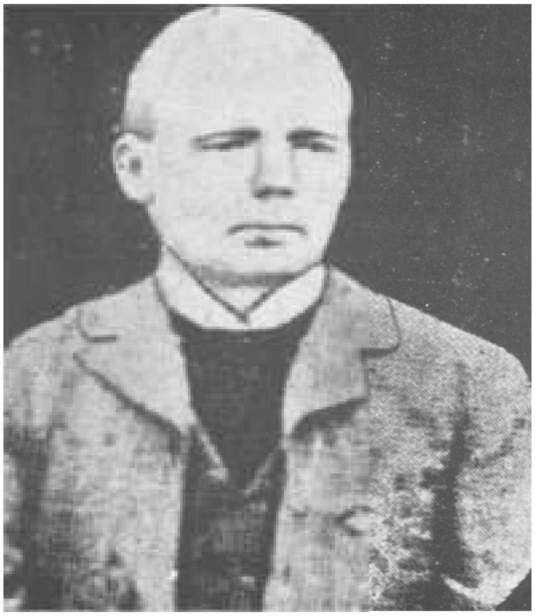
R.T. H.Grifith	Dr. A. VENIS
Dr. GANGANATH JHA	Pdt.NARAYANSHASTRI KHISTE

1st President of India In College 1953

सभामध्ये समासीनो माननीयभारतराष्ट्रपतिः डॉ. श्रीराजेन्द्रप्रसादमहोदयः, उत्तरप्रदेशराज्यपाल-श्रीकन्हैयालालमाणिकलालमुंशीमहोदयः, उत्तरप्रदेशमुख्यमन्त्रिश्रीगोविन्दवल्लभपन्तश्च।

Shri Lal Bahadur Shastri Prime Minister of India in convocation 1964

Dr. Sampurnananda

Dr. Shankar Dayal Sharma Prisident of India in Convocation